

NCERT SOLUTIONS

CLASS - 11th



aglasem.com

Class : 11th

Subject : History

Chapter : 2

Chapter Name : लेखन काला और शहरी जीवन

Q1 आप यह कैसे कह सकते हैं की प्राकृतिक उर्वरता और खाद्य उत्पादन के उच्च स्तर ही आरंभ से शहरीकरण के कारण थे?

Answer. मानव सभ्यता के विकास के क्रम को देखा जाए तो यह निश्चित रूप से स्पष्ट होता है कि सभ्यता के विकास में गावों के बाद शहरों की स्थापना हुई। ग्रामीण सभ्यता आरंभ से ही प्राकृतिक उर्वरता और खाद्य-पदार्थों के उच्च उत्पादन के केंद्र रही है। कृषि और पशु-पालन इस क्रम में महत्वपूर्ण कड़ी हैं। जबकि शहरों की स्थापना इन सभी कार्यों को व्यापक स्तर पर करने के उद्देश्य से हुई। इसलिए अधिकांश प्राचीन शहर नदियों के किनारे बसे या बसाये गये। इसके अलावा शहरों की व्यवस्था जटिल होने के कारण और जन घनत्व अधिक होने से यहाँ समाज, संचार, व्यापार, कला और परिवहन की विविध अवधारणाएं विकसित हुईं। मेसोपोटामिया इसका प्रारंभिक उदाहरण है।

शहरों के विकास में प्राकृतिक उर्वरता का स्थान महत्वपूर्ण इसलिए भी है क्योंकि शहरों को उन्हीं जगह बसाना उचित माना जाता रहा है जहाँ पानी की उपलब्धता हो। पानी की वजह से कृषि और अन्य व्यवसाय को सुचारू रूप से चलने में सहायता मिलती थी। साथ ही, शहरों में घर बसाने के लिए भी पानी मूल आवश्यकता थी। लेकिन, इस बात को नाकारा नहीं जा सकता की शहरीकरण के लिए रोजगार के विभिन्न अवसर, परिवहन के साधन और श्रमिकों के लिए लगातार कार्य की उपलब्धता होना भी मुख्य भूमिका निभाते हैं।

Page : 48 , Block Name : संक्षेप में उत्तर दीजिये

Q2 आपके विचार में निम्नलिखित में से कौन सी आवश्यक दशाएँ थीं जिनकी वजह से प्रारम्भ में शहरीकरण हुआ था और निम्नलिखित में से कौन कौन सी बातें शहरों के विकास के फलस्वरूप उत्पन्न हुईं?

(क) अत्यंत उत्पादक खेती, (ख) जल-परिवहन, (ग) धातु और पत्थर की कमी (घ) श्रम विभाजन, (ङ) मुद्राओं का प्रयोग, (च) राजाओं की सैन्य शक्ति जिसने श्रम को अनिवार्य बना दिया।

Answer. प्रारम्भिक शहरीकरण में निश्चित रूप से निम्नलिखित सभी दशाओं का योग था। इसमें से कुछ शहरीकरण के लिए उत्प्रेरक सिद्ध हुई और कुछ के लिए शहरीकरण। इन दशाओं को निम्न बिन्दुओं के समझा जा सकता है –

अत्यंत उत्पादक खेती – सभ्य मानव ने खेती को अपनी खाद्य आपूर्ति का मुख्य साधन बना लिया था, ऐसे में शहरों के निर्माण के लिए उपजाऊ भूमि का चयन आवश्यक था जहां वृहत और व्यावसायिक स्तर पर खेती की जा सके। शहरों का जनघनत्व गावों की तुलना में कहीं अधिक था इसलिए भी खाद्य आपूर्ति के लिए खेती का अत्यंत उर्वर होना आवश्यक था।

जल-परिवहन – जल मानव की बुनियादी जरूरतों में से एक है। शहरों की स्थापना और विकास के लिए निश्चित रूप से स्थायी जल स्रोतों की आवश्यकता थी। इसके साथ ही कृषि उत्पादन में भी जल की नियमितता से मानव भली-भांति परिचित था। जल की उपलब्धता के साथ ही उसके परिवहन के साधनों का विकास भी शहरीकरण की

निमित्त हुआ इसमें संदेश नहीं है। मेसोपोटामिया में शहर के मध्य से गुजरने वाली जल धाराएँ इसका विशिष्ट उदाहरण हैं।

धातु और पत्थर की कमी – पत्थर और धातुएं शुरुआत से मानवीय सभ्यता के शुरुआत से ही उसकी मौलिक आवश्यकताओं में गिने जाते हैं। पत्थर औजार और आश्रय निर्माण के लिए आवश्यक हैं जबकि धातुएं आभूषणों, बर्तनों एवं अन्य कई प्रकार के प्रयोजनों में प्रयुक्त होती हैं। इनकी बहुलता शहरों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक थी, किन्तु शहरों के निर्माण में इनकी खपत इनके वृहत उत्पादन का कारण बनी। इससे व्यापार और परिवहन के साधन भी विकसित हुए।

श्रम विभाजन – शहरों की संरचना ग्रामीण बस्तियों की तुलना में जटिल थी, ऐसे में व्यक्तिगत श्रम गौड़ हो जाता है। शहर के विकास और संचालन के लिए श्रम विभाजन की आवश्यकता पड़ती है। श्रम विभाजन से समूह बोध की भावना को बल मिला ही साथ ही शहरों का सामाजिक परिदृश्य भी बदला।

मुद्राओं का प्रयोग – शहरीकरण के विकास और विविध उद्योगों के प्रचलन के परिणामस्वरूप मुद्राओं की अवधारणा का विकास हुआ। मुद्राओं ने मानवीय लेन-देन को सहज और सुलभ बनाकर व्यापार और उद्योग की संभावनाओं की विस्तार दिया।

राजाओं कि सैन्य शक्ति जिसने श्रम को अनिवार्य बना दिया – शहर एक सुव्यवस्थित समाजिक संगठन की आधारशिला पर विकसित हुए थे। आगे इस समाज में राजा और उसी सेना का गठन भी इस व्यवस्था को सुचारु और बिना किसी अड़चन के चलाने के निमित्त हुआ। इससे श्रम की अनिवार्यता निश्चित हुई और शहरीकरण को स्थायित्व मिला

Page : 48 , Block Name : संक्षेप में उत्तर दीजिये

Q3 यह कहना क्यों सही होगा कि खानाबदोश पशुचारक निश्चित रूप से शहरी जीवन के लिए खतरा थे ?

Answer. खानाबदोश पशुचारक किसी सामाजिक संगठन का हिस्सा नहीं थे। भोजन और अन्य संसाधनों की खोज में वह एक स्थान से दूसरे स्थान तक प्रायः भटकते रहते थे। ऐसे में उनकी जीवन-शैली में स्थायित्व और सामाजिक मूल्यों का अभाव निहित था। मारी राज्य से प्राप्त अभिलेखों से यह स्पष्ट है कि पशुचारकों और खानाबदोश प्रजातियों के शहर में प्रवेश पर प्रतिबंध नहीं था लेकिन फिर भी उनके क्रिया कलापों पर नजर रखी जाती थी। उनके पशु और स्वयं वे भी प्रायः फसलों और अन्य संसाधनों को नुकसान पहुंचाते थे। पशुचारकों के कारण आम लोगों के उपयोग में आने वाले साधनों की कमी होने लगती थी। वह उनके साधन जैसे खेत, घास, पानी आदि का इस्तेमाल करते थे। कुछ ऐसी घटनाओं की जानकारी भी मिलती है जैसे कि खानाबदोश पशुचारक आम लोगों को कई तरह नुकसान पहुंचाते थे। अतः यह कहा जा सकता है कि खानाबदोश और पशुचारक समाज शहरी ढांचे में फिट नहीं बैठते थे।

Page : 48 , Block Name : संक्षेप में उत्तर दीजिये

Q4 आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि पुराने मंदिर बहुत कुछ घर जैसे ही होंगे ?

Answer. शुरुआत में शहरों का गठन तीन रूपों में सामने आता है, पहले वे जो मंदिर के चारों तरफ विकसित हुए, दूसरे वे जो व्यापार के केंद्र थे और अन्य शाही शहर। मंदिर बहुत कुछ घर जैसे ही होते थे। यह प्रायः एक छोटे से देवालय के रूप में विकसित हुए थे जिसमें खुले आँगन के चारों तरफ कुछ कमरे हुआ करते थे। यह पूरा ढांचा

कच्ची-पक्की ईंटों का बना होता था और काफी हद तक घरों से मिलता-जुलता था। आज भी मंदिरों को देवताओं के घर कि संज्ञा भी दी जाती है। सामान्य घरों और मंदिरों के आरंभिक ढांचों में जो मूलभूत अंतर है वह इसकी बाहरी दीवारों का निश्चित अंतराल के बाद भीतर और बाहर की ओर मुड़ा हुआ होना था। सुमेरियन विविध देवी देवताओं की सत्ता में विश्वास करते थे जिसमें से एनलिल का नाम प्रमुख है। ये देवी देवता प्रायः प्रकृति की विविध शक्तियों के ही द्योतक थे विविध उत्सव, कृषि एवं अन्य उत्पादों का लेन देन और देवी देवताओं के सामूहिक पूजन में लोग बड़ी संख्या में इन मंदिरों में और इसके आस-पास एकत्रित होने लगे यहीं से शहर की अवधारणा को विस्तार मिला।

Page : 48 , Block Name : संक्षेप में उत्तर दीजिये

Q5 शहरी जीवन शुरू होने के बाद कौन-कौन सी नई संस्थाएं अस्तित्व में आईं? आपके विचार में उनमें से कौन-सी संस्थाएं राजा की पहल पर निर्भर थीं।

Answer. शहरी जीवन की शुरुआत मानव सभ्यता के व्यवस्थित स्वरूप का द्योतक है। उचित भौगोलिक वातावरण और उर्वर भूमि पर शहरों की स्थापना के तीन स्वरूप सामने आते हैं –

(क) मंदिर के आस-पास विकसित शहर,

(ख) व्यापारिक केन्द्रों के रूप में और

(ग) शाही शहर।

आगे शहर की स्थापना के बाद खाद्य उत्पादन, परिवह, मुद्राओं और व्यापार जैसी सेवाओं के फलस्वरूप अर्थव्यवस्था का प्रारम्भिक रूप विकसित हुआ। इसके साथ ही साथ इस अर्थव्यवस्था के स्तावितव और संचालन के लिए एक निश्चित सामाजिक संगठन की भी आवश्यकता थी। आगे राज्य और राजा के द्वारा इसके नियंत्रण का भी प्रावधान किया गया। यह व्यवस्था तत्कालीन देहातों में जमीन और पानी के लिए बार बार होने वाले झगड़ों को ध्यान में रखकर भी विकसित की गई थी। इन लड़ाइयों में जो मुखिया लड़ाई जीतते थे वे विविध तरीकों से अपने अनुयायियों की संख्या बढ़ाकर राजा बने। लूटपाट का एक बड़ा हिस्सा मंदिरों को भेंट किया जाने लगा और इस तरह राजा का प्रभाव मंदिर के संचालन और उसमें होने वाली गतिविधियों पर पड़ने लगा।

राजा के द्वारा सुव्यवस्थित प्रशासन के उद्देश्य से निजी सुरक्षा और जनहित के लिए सेनाओं का निर्माण किया गया। शहर के भौगोलिक रूप को सुदृढ़ करने के लिए प्राचीरों का निर्माण हुआ। इसका मुख्य उदाहरण उरुक नगर है जो 4200 ई.पू. से 400 ई.पू. तक अस्तित्व में रहा। इसको स्थापत्य कला की दिशा में नवीन प्रयोग के रूप में देखा जा सकता है। इसके अलावा राजाओं के प्रभाव से विविध कलाओं का उद्भव और विकास भी हुआ। आंतरिक सामाजिक संगठन में विवाह, न्याय, कानून, व्यापार, कृषि, परिवहन, सुरक्षा आदि आवश्यकताओं को भी राजा का संरक्षण प्राप्त हुआ।

Page : 48 , Block Name : संक्षेप में निबंध लिखिए

Q6 किन पुरानी कहानियों में हमें मेसोपोटामिया की सभ्यता की झलक मिलती है?

Answer. यूरोपवासियों में मेसोपोटामिया की अनेक कथाएं प्रचलित हैं, जिसमें जिसमें ओल्ड टेस्टामेंट की बुक ऑफ जेनेसिस में शिमार या सुमेर अर्थात् ईंट से बने शहर की भूमिका उल्लेख मुख्य रूप से किया जाता है। यूरोप के विद्वत्तजन और यात्री अपने पूर्वजों की भूमि को मेसोपोटामिया ही बताते थे। आगे 1873 में एक ब्रिटिश समाचार पत्र ने ब्रिटिश म्यूजियम द्वारा प्रारंभ किए गए इस अभियान का खर्च उठाया। इस अभियान के तहत ऐसी पट्टी की खोज की जानी थी जिस पर बाइबल में लिखित जलप्लावन की कहानी अंकित थी। 1960 तक यह इसका मुख्य उद्देश्य यहीं तक सीमित नहीं रहा, अनेक पुरातात्विक तकनीकों के विकसित हो जाने की वजह से मेसोपोटामिया का अध्ययन विविध तरीकों से हुआ और इससे जुड़ी विभिन्न कथाएं सामने आईं। उदाहरण के लिए

राजा एनमार्कर के बारे में लिखे हुए सुमेरियन महाकाव्य को देखा जा सकता है। उसके साथ साथ मंदिर सामाजिक व्यवस्था व्यापार परिवहन आदि के प्रमाण भी इससे प्राप्त होते हैं।

बाइबल के जैसा उद्धरण हिंदी के भी कई महाकाव्य में देखने को मिलता है जिसमें जयशंकर प्रसाद का कामायनी प्रमुख है इस कहानी की कथावस्तु बाइबल के जल प्लावन से मिलती-जुलती है किंतु जिउसूद्र या उतनापिष्टम की जगह कामायनी में मनु ने ले ली है।

Page : 48 , Block Name : संक्षेप में निबंध लिखिए

aglasem.com